

समकालीन भारत में निम्नवर्गीय प्रसंग का संदर्भ में किसानों का प्रतिरोध और राजनीतिक प्रतिनिधित्व

अनन्त प्रकाश¹, चन्दन कुमार²

रिसर्च स्कॉलर, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Email: anantprakash.kmc@gmail.com

सारांश: इस आलेख में समकालीन भारत में निम्नवर्गीय प्रसंग के संदर्भ में किसानों का प्रतिरोध और प्रतिनिधित्व पर चर्चा करेगा। निम्नवर्गीय प्रसंग क्या है? भारत में किसानों को निम्नवर्गीय श्रेणी के रूप में कैसे समझ सकते हैं? प्रतिरोध और प्रतिनिधित्व से क्या तात्पर्य है? किसान जो भारत में उपनिवेशिक काल से लेकर अब तक शासित और शोषित रहा है जिससे किसानों में असंतोष होने के कारण से प्रतिरोध की भावना उत्पन्न हुआ है। जो जमींदार, साहूकार और सरकार के खिलाफ प्रतिरोध किये हैं। किसानों का औपनिवेशिक और उत्तर औपनिवेशिक काल में प्रतिरोध और प्रतिनिधित्व का क्या स्वरूप रहा है? जो किसानों में एकजुटता कायम करने में अहम भूमिका निभाया है। इसको मुख्य आंदोलनों के माध्यम से समझने का प्रयत्न करेगा। समकालीन भारत में किसानों का प्रतिरोध सरकार के विरोध नजर आता है। परन्तु इस प्रतिरोध में पूर्ण रूप से एकजुटता नजर नहीं आता है इसका क्या कारण है? NGO और राजनीतिक दलों के नेतृत्व में ही किसानों का प्रतिरोध मुख्य रूप से उभर कर आ रहा है जो किसानों का राजनीतिक प्रतिनिधित्व करने का प्रयास कर रहे हैं। किसान भारत में एक बहुसंख्यक वर्ग होने के बाद भी भारतीय लोकतंत्र में अपनी भूमिका को क्यों सुनिश्चित नहीं कर पा रहे हैं? आज भारत में किसानों के प्रतिरोध का मुख्य कारण भूमि-अधिग्रहण और भूमि सुधार अधिनियम है।

1. परिचय

निम्नवर्गीय शब्द का सबसे पहले प्रयोग ग्रामसी ने अपने पुस्तक (prison notebooks) में किया था जिसको राजनीतिक और समाज से जोड़कर लिखने का प्रयास किया है। इसके बाद इतिहासकार भी अपने आप को इस समूह से जोड़कर अध्ययन करने लगे। 1980 के दशक में निम्नवर्गीय अध्ययन का समूह भारत में उभर कर आया है।¹ इस समूह ने भारत के इतिहास और समाज को पुनः अध्ययन करके निम्नवर्गीय मुद्दों को उजागर किया। निम्नवर्गीय प्रसंग के संदर्भ में अलग अलग परिभाषा दिया गया है। निम्नवर्ग के रूप में दास, किसान, मजदूर, शासित और शोषित लोगों को शामिल किया गया है। जिनको सेवा, जमीन, पूंजी के आधार पर समाज में निम्नवर्ग माना गया है। जिससे भारत के किसानों को भी निम्नवर्ग के रूप में समझा गया है। क्योंकि भारत में औपनिवेशिक काल से लेकर अब तक कृषि उपेक्षित रहा है। सरकार उद्योगों को ज्यादा महत्व दिया है। किसानों के एकजुटता को कायम करने के लिए औपनिवेशिक काल से लेकर समकालीन भारत में भी अभिजात, धनी किसानों, के नेतृत्व में ही प्रतिरोध और

¹ Loai, EL Habib. Retracing The Concept Of The Subaltern From Gramsci To Spivak: Historical Development And New Application.

प्रतिनिधित्व हुआ है² सामाजिक सुरक्षा को कलम करने के लिए भू-सूधार को आजादी के बाद से सही रूप से लागू करने का प्रयास किया जा रहा है। अपने आजीवन को सुनिश्चित करने के लिए किसान जमीन बचाओ, जमीन किसान का न्य प्रकार के नए ढांचे को प्रतिरोध को कलम कर रहे हैं। ये प्रतिनिधित्व क्षेत्र, जाति, धर्म, आधारित होने के कारण से सफल नहीं हो पा रहा है। किसानों को समस्याओं लग लग होने के कारण से भी किसान एकजुट नहीं हो पाते हैं।

2. निम्नवर्गीय

निम्नवर्गीय शब्द से तात्पर्य यह है कि जो सत्ता और शासन से वंचित रह जाता है।

ग्रामसी निम्नवर्गीय को समाज के निम्न तबके के लोगों के रूप में परिभाषित किया है। जिनके उपर अभिजात के द्वारा शासन किया जाता है जिनको मौलिक अधिकार और राष्ट्र के संस्कृति से वंचित रखा जाता है³ **spivak** के अनुसार उतर-औपनिवेशिक काल में निम्नवर्गीय को आवाजविहीन और राजनीतिक पिछड़ा माना जाता है⁴ इस संदर्भ में आज निम्नवर्गीय का आवाज उनके प्रतिनिधियों द्वारा ही दबा दिया जाता है सिर्फ सत्ताधारी वर्ग के आवाज के आदतन हो जाते हैं। **रंजित गुहा** के अनुसार साउथ एशियन समाज में निम्नवर्गीय एक निम्न स्तर के समूह को माना जाता है जिसमें किसी भी जाति, वर्ग, लिंग का महत्व नहीं होता है। ये शासक वर्ग के लिए व्यक्ति बने रहते हैं। इस समाज में अभिजात वर्गीय शासन का परम्परा विद्यमान रहा है⁵ 1970 के दशक में भारत में निम्नवर्गीय समूह के रूप में उसे माना गया है जो समाज में पिछड़े हैं जिनका समाज के किसी भी अभिकरण में सामाजिक स्थिति कायम नहीं है। **Homi k Bhabha** ने निम्नवर्गीय को समाज में दबे नस्लीय अल्पसंख्यक के रूप माना है। **Boaventure de Sousa santos** ने भारत में महिला, दलित, ग्रामीण, आदिवासी, आप्रवासी, मजदूर को निम्नवर्गीय माना है। इस प्रकार से इन सभी व्याख्याओं से यह स्पष्ट होता है कि निम्नवर्गीय समाज में शासित और शोषित रहे हैं।

3. किसान निम्नवर्ग के रूप में

किसान मानव जाति का एक बड़ा भाग है फिर भी इनके बारे में हमारी जानकारी बहुत कम है। इस संदर्भ में यह समझ सकते हैं कि यदि कोई अज्ञात मनुष्यों के बारे में लिखना चाहता होगा तो यह संभव ही किसान के बारे में लिखेगा। किसान उपनिवेशिक काल से लेकर उतर औपनिवेशिक काल तक शासन से वंचित रहे हैं। औपनिवेशिक काल में इनका शोषण किया गया इनका इतिहासिक परिपेक्ष्य पर चर्चा करें तो किसानों ने औपनिवेशिक शासन का

² Posani, Balamuralidhar (2009). Farmer Suicides And The Political Economy Of Agrarian Distress In India, Feb, 2009.

³ Loai, EL Habib. Retracing The Concept Of The Subaltern From Gramsci To Spivak: Historical Development And New Application.

⁴ spivak, gayatri chakravorty. can the subaltern speak?

⁵ Guha, Ranjit. On Some Aspects Of The Historiography Of Colonial India.

विद्रोह किया है। किसानों ने जमीनदाar, साहूकार, और सरकार का सामाजिक राजनीतिक रूप साम्बन्ध रख है⁶ किसान कठोर कृषि विकास में इतिहासिक काल सामो गदाम रह है किसानों ने जमीनदाar, साहूकार, सरकार को कर दिया है। किसानों को आज भी अपनी कोई पहचान नहीं मिल सकी है। समाज कानिचलास्तर पर शोषित है। किसान ग्रामीण खजिहर, ढटईदाar, भूमिहीन किसान, सीमा कानिचला किसान, पुनकर कानिचला रूप में भारतीय समाज में निम्न वर्ग कानिचला रूप में है। भारत में 1990 कानिचला किसानों का पहचान को आर्थिक नीति नानिचला दल दिया है। भारतीय किसान जाति, धर्म, क्षत्र, कानिचला आधार पर विभाजित हो गया है। भारतीय कृषि अर्थव्यवस्था में अवशेष कानिचला रूप में ढच गया है⁷ भारत में किसानों को वर्ण व्यवस्था सानिचला अलग जाति माना जात है सामाजिक, आर्थिक रूप सानिचला पिछड़ा और राजनीतिक रूप सानिचला असशक्त माना गया है। यानिचला निम्न वर्ग होना कानिचला कारण नीति निर्माण और सानिचला सानिचला सानिचला रह जात है। इस प्रकार सानिचला किसानों ने अपनी भूमिकानिचला सुनिश्चित करनानिचला लिए औपनिवेशिक काल सानिचला कर समकालीन भारत में भी प्रतिरोध किया है।

4. प्रतिरोध

प्रतिरोध सानिचला अभिप्राय है की किसी कानिचला विरुद्ध खड़ा होना होता है। किसी कानिचला खिलाफ आवाज उठाना, वर्चस्व कानिचला खिलाफ एकजुटता, बदलाव की माँग करना होता है। राजनीतिक संदर्भ में यह बामपंथी विचार धारा माना जाता है। **Edward Burke** कानिचला अनुसार “प्रगति” का होना प्रतिरोध कानिचला लिए जरूरी है।” प्रगति सामाजिक, सांस्कृतिक किसी भी रूप में हो सकती है। **Arnold** कानिचला अनुसार “प्रतिरोध एक नया सांस्कृतिक कानिचला रूप में उभरा है।” **कार्ल मार्क्स** के अनुसार प्रतिरोध समाधान नहीं है यह समस्या है।” **Goof Man** के अनुसार संस्थाओं का अलग पहचान और स्वयं का एक पहचान कायम करने के प्रयास को प्रतिरोध कहते हैं। अलग अलग तरीके से प्रतिरोध को जाहिर किया जाता है। राजनीतिक प्रतिरोध, सांस्कृतिक प्रतिरोध, के माध्यम से किया जाता है। प्रतिरोध में कपड़े, संगीत, नारा ये सारे सांस्कृतिक प्रतिरोध हैं⁸ **फूको** के अनुसार अगर जागरूकता होगा तभी प्रतिरोध होगा। प्रतिरोध नीति निर्माण और नीति को बदलने की माँग करता है। भारत में किसानों का प्रतिरोध औपनिवेशिक काल से लेकर अभी तक विद्यमान है। **गाँधी** के अनुसार ब्रिटिशों के खिलाफ लड़ाई में प्रतिरोध का स्वरूप सत्याग्रह था “सत्य के लिए आग्रह करना” ब्रिटिश शासन को असत्य मानते थे⁹ प्रतिरोध को पहचान और पहचान निर्माता के रूप में समझ सकते हैं। भारतीय किसानों ने जमीनदाar, साहूकार, सरकार के खिलाफ प्रतिरोध किया है और अपने पहचान को बनाने का प्रयास किया है। किसानों के पहचान को कायम करने के लिए राजनीतिक प्रतिनिधित्व किया गया है। जिसमें व्यक्तिगत, सानिचला ठनो और राजनीतिक दलों का भूमिका रहा है।

⁶ Guha, Ranjit. Elementary Aspects Of Peasant Insurgency In Colonial India.

⁷ Posani, Balamuralidhar (2009). Farmer Suicides And The Political Economy Of Agrarian Distress In India, Feb, 2009.

⁸ Resistance In Social Science, (2015). Retrieved from <http://What-When-How.Com/Social-Sciences/Resistance-Social-Science/>

⁹ Pandey, Abha. Gandhi And Agrarian Class.

5. राजनीतिक प्रतिनिधित्व

राजनीतिक प्रतिनिधित्व की अधारणा व्यापक है जिसको पूर्ण रूप से व्याख्या करना संभव नहीं है। परन्तु कुछ विद्वान इस अधारणा से सहमत हैं की प्रतिनिधित्व का तात्पर्य वर्तमान को दुबारा से बनना है। प्रतिनिधित्व वर्तमान का निर्माण करता है। राजनीतिक प्रतिनिधित्व नागरिकों का आवाज, विचार, और उनके हितों को प्रस्तुत करता है। Encyclopedia ने राजनीतिक प्रतिनिधित्व का मुख्य लक्ष्य पहचान को चिन्हित करना, इसका सरोकार औपचारिक और अनौपचारिक माना है। **Andrew Rehfeld** का मानना है की प्रतिनिधित्व को जनता के द्वारा स्वीकृति प्राप्त होता है तब वह प्रतिनिधि बनता है।¹⁰ Pitkin के अनुसार लोकतांत्रिक व्यवस्था में प्रतिनिधित्व के कार्य को नकारा जा सकता है “प्रतिनिधि” प्रतिनिधित्व के लिए खड़ा होता है जो जिसका प्रतिनिधित्व करेगा उनका ही हित प्रस्तुत करेगा। राजनीतिक प्रतिनिधित्व लोकतंत्र और जनता के लिए होता है। भारत में किसानों का औपनिवेशिक काल में जमींदार, साहूकार और राजनीतिक दलों ने प्रतिनिधित्व किया था अभिजातों ने किसानों को एकजुट करने में अहम भूमिका निभाया था।¹¹ राष्ट्रवादियों की द्वारा राष्ट्र की भावना को पुरे भारत में किसानों और देशी पूजिपंतीओं के माध्यम से फैलाया जा रहा था।¹² आजादी के बाद इसमें गैर सामाजिक संघटनों का भूमिका बढ़ गया है। औपनिवेशिक काल से लेकर अभी तक के किसानों के प्रतिरोध और राजनीतिक प्रतिनिधित्व को किसान आन्दोलनों के माध्यम से समझ सकते हैं।

6. औपनिवेशिक काल में किसान आन्दोलन

भारत में किसान जमीन को माँ मानते हैं। भारत में जब औपनिवेशिक शासन का आरम्भ होता है तो ब्रिटिशों ने भारतीय किसानों पर कर प्रणाली लगा दिया। कर प्रणाली से संतुष्ट किसानों ने औपनिवेशिक शासन का खिलाफ विद्रोह किया। भारत में बहुत से किसान विद्रोह हुए। जिसका प्रमुख कारण था या संघर्ष हिंसात्मक रूप में भी हुआ। ब्रिटिशों ने भारतीय किसानों का मजदूरी को बदल दिया।

किसानों को पना बहुत सारा अधिकार खो दिया। किसानों पर कर चुकाना दबाव बनाया जाना लगा। इस कारण से किसान साहूकार से कर्ज लाना शुरू कर दिया। कर्ज नहीं चुकाने पर इनको पना जमीन साहूकारों से दबा पड़ता था। इस कारण कुछ किसान बटाईदार, मजदूर बन गए। कुछ किसानों को घर छोड़ कर जाना पड़ा।¹³ 19वीं सदी के मध्य में भारत में एक नया प्रकार का किसान संघर्ष का आरम्भ होता है। यह आन्दोलन के रूप में उभरता है जिसमें किसान धार्मिक भाव मिटा कर एकजुटता को बढ़ावा देते हैं। **आदिवासी विद्रोह** (1855-56) जो कर और साहूकार

¹⁰ Political Representation (2011). First Published Mon Jan 2, 2006; Substantive Revision Mon Oct 17, 2011.

¹¹ Guha, Ranjit. Elementary Aspects Of Peasant Insurgency In Colonial India.

¹² Kaviraj, Sudipta. Modernity And Politics In India.

¹³ Kisan Struggles In India. Retrieved from

http://Shodhganga.Inflibnet.Ac.In/Bitstream/10603/8104/9/09_Chapter%202.Pdf.

के विरोध हुआ था इसमें पुलिस और साहूकार का विरोध हुआ था **Indigo Revolt** 1859 में बंगाल में हुआ था यह विद्रोह नील की खेती और जमीनदारों के कर के विरुद्ध हुआ था **मराठा किसान विद्रोह** मारवाड़ी और गुजराती साहूकारों का खिलाफ हुआ था **गाँधी** और किसान सत्याग्रह 1917 में चण्डीगढ़ में जमीनदारों को एकजुट किया। तीन कठिया प्रणाली का खिलाफ आवाज उठाया गया। बटाईदारों ने 1920 में उत्तर प्रदेश में सत्याग्रह आरम्भ कर दिया। 1920-30 में किसान आन्दोलन पुराने भारत में व्यापक रूप से फैला गया। किसानों को संगठित करने में किसान सभा की भूमिका अहम थी।

तेलंगाना किसान आन्दोलन में किसानों का नारा था की “जमीन खेतिहर का”। तेलंगाना में किसान सभा का माध्यम से किसान आन्दोलन ने जमीनदारों को प्रभावित किया। **शेखावती किसान** आन्दोलन राजस्थान में किसानों ने राजपूतों का खिलाफ किया जागीरदारी प्रथा का माध्यम से इनका शोषण किया जाता था **तेभागा** किसान आन्दोलन (1946) में किसानों ने जमीनदारों का खिलाफ क्रांति आरम्भ कर दिया इनका माँग था की एक तिहाई जमीन जमींदार को और दो तिहाई किसान को मिलना चाहिए। इसमें हिन्दू और मुस्लिम दोनों धर्म के किसानों ने मिलकर जमीन माँग किया। महिलाओं का भी भूमिका रहा था।

इस प्रकार औपनिवेशिक काल में किसान आन्दोलन हुआ जिसका मुख्य कारण जमींदारी प्रथा, साहूकार, और कर प्रणाली था किसान आन्दोलन पुराने भारत में एक साथ नहीं हो सका। कारण किसानों में जागरूकता का कमी था किसान बिना बहार के नृत्व का एकजुट नहीं हो सकता है। किसानों को औपनिवेशिक काल में एकजुट करने में किसान सभाओं और राजनीतिक दलों, व्यक्तिगत प्रयास का भूमिका था¹⁴ 1922 में **किसान संघ**, मरवाड़ किसान सभा 1940 में किसानों का प्रतिनिधित्व किया कुछ किसान सभाओं का निर्माण राजनीतिक दलों द्वारा किया **अखिल भारतीय किसान कांग्रेस** 1936 का गठन किया गया। इस प्रकार किसानों का एक नया पहचान उभर कर आता है। जो राजनीतिक प्रतिनिधित्व के कारण इनके हित को महत्व दिया जाने लगा। किसानों में व्यापक एकजुटता कायम हुआ जिसके कारण किसान आन्दोलनों में सहभागिता, हड़ताल, चुनाव प्रचार, जबरदस्ती जमीन पर कब्जा और पुलिस और जमीनदारों के खिलाफ विरोध नजर आने लगा जो एक नये प्रकार के आन्दोलन के स्वरूप और राजनीतिक प्रतिनिधित्व की ओर अग्रसर होने लगा¹⁵

7. आजादी के बाद में किसान आन्दोलन

किसान आन्दोलन का स्वरूप में बदला आ गया है। आजादी के बाद के आन्दोलनों में प्रतिरोध और प्रतिनिधित्व में नया सामूहिक हित, नया एकजुट रणनीति का साथ किसानों ने आजादी के कायम करने के लिए प्रभुत्व का खिलाफ प्रतिरोध किया है। इस संदर्भ में **नक्सलवादी आन्दोलन** को समझ सकते हैं। यह आन्दोलन 1960

¹⁴ ibid

¹⁵ Singharoy, K Debal, Peasant Movements In Contemporary India: Emerging Forms Of Domination And Resistance.

के अंतिम दशक में बंगाल में हुआ था जिसमें किसानों ने यह नारा दिया कि जमीन जोतदार का होना चाहिए। बहुआमजूदरों को जमीन का हक होना चाहिए जिसमें CPI ने किसानों का प्रतिनिधित्व किया था¹⁶

इस प्रकार भारत में किसान आन्दोलन भाषाओं, विचारधाराओं के आधार पर नहीं होकर मूल्य और मुनाफा के आधार पर सामूहिक कार्यवाही हो गया। जिसका लक्ष्य राजनीतिक भागीदारी और अस्तु हित का पाना हो गया। आजादी के बाद भारत में भूमिहीनता गरीब किसानों के लिए समस्या बन गया इसके खिलाफ 1960 के दशक में आन्दोलन आरम्भ हो गया इसके लिए 1971 में राष्ट्रीय स्तर पर भूमि- सुधार चलाया गया परन्तु इसका प्रभाव पूरे भारत में एक समान नहीं रहा था परन्तु गरीब किसानों में आर्थिक रूप से सक्षमता आया जिससे भारतीय किसानों का एक अलग पहचान और प्रतिरोध उभर कर आता है। गरीब किसान राजनीतिक पार्टियों के साथ जुड़ने लगे जिसके कारण राजनीतिक पार्टियों ने अपने आप को किसानों के हित और पहचान आधारित पार्टी मानाने लगी। इसमें जाति का प्रधानता ना होकर वर्ग का प्रधानता था शिक्षा और संचार के बढ़ने के कारण किसानों का पहचान दिन प्रतिदिन बदलता जा रहा है। उदारीकरण और भूमंडलीकरण ने किसानों पर अलग तरीके का प्रभाव डाला है जिसके कारण समकालीन भारत में किसानों के प्रतिरोध और प्रतिनिधित्व में बदलाव आ गया है।

8. समकालीन भारत में किसानों का प्रतिरोध और राजनीतिक प्रतिनिधित्व

1990 के बाद किसानों के पहचान को आर्थिक नीति ने बदल दिया है और किसानों के प्रतिरोध के स्वरूप में भी बदलाव आया है। 1980 के दशक में कमाल्ड पॉलिटिक्स का उदय होता है। ये बहुसंख्यक वर्ग के रूप में उभरता है जिसके कारण प्रत्येक राजनीतिक दल इसको महत्व देता है। जिसके कारण किसान वर्ग एक नये शक्ति के रूप में उभरता है।¹⁷

परन्तु भारत में जातीय और धार्मिक महत्व चुनावी राजनीति में बढ़ गया। इससे एक नये सामाजिक और राजनीतिक स्तर पर पार्टिया उभर कर आती है जो किसानों को चुनौती देती है। सामाजिक और राजनीतिक महत्व ग्रामीण समाज में बढ़ गया। 1980 के दशक में ग्रामीण राजनीतिक का राष्ट्रीयकरण एक नए तरह के एकजुटता से आरम्भ होता है। Dec 1978 चरण सिंह और किसानों ने दिल्ली में प्रदर्शन किया था यह क्रांति जमीनदारों और भूमिहीनों के लिए नहीं था यह उस परिवर्तन का प्रतिरोध कर रहे थे जो सरकार ने मूल्य वृद्धि, कर्ज प्रणाली और शहर गाँव के लिए नीति निर्माण में जो भेदभाव किये गये थे। शरद जोशी शेटकरी सघठन महाराष्ट्र में और महिंद्र सिंह टिकैत, भारतीय किसान सघ पंजाब और उत्तरी उत्तर प्रदेश में नेतृत्व कर रहे थे। इनको छोटे और बटाईदार किसानों का समर्थन प्राप्त था ये नए राजनीति को गैर-पार्टी के आधार पर कायम किये और 1980 के राजनीतिक को

¹⁶ ibid

¹⁷ Posani, Balamuralidhar (2009). Farmer Suicides And The Political Economy Of Agrarian Distress In India, Feb, 2009.

प्रभाषित किया। सभी पार्टियोंने इनके माँगे के आधार पर नीतियोंका निर्माण किया 1980 के ंमि दशक में ग्रामीण भारत ने ंभूतपूर्ण राजनीतिक पहचान और राजनीतिक प्रभाष को स्थापित किया। परन्तु मडल, मड्रिर, मार्केट ने ग्रामीण भारत के किसानो के पहचान को कम कर दिया । आज भारतीय किसानो में एकजुटता की कमी आ गया है किसानो को बहुत सारे पहचान से जोड़ दिया गया है। जिसमे जाति, धर्म, क्षेत्र, का महत्व हो गया है। ंब किसान राजनीतिक प्रतिनिधित्व और प्रतिरोध के लिए ंलग ंलग ंभिजित हो गये है। आज के समय में किसान आन्दोलन आश्चर्य बन गया है। आज के समय में आन्दोलन का नेतृत्व बड़े किसान कर रहे है। जिनका ंपना हित है छोटे किसान इनका समर्थन आर्थिक हित के लिए करते है। राजनीतिक दलोंने किसानो को जाति और धर्म में बाँट कर कमजोर कर दिया है।¹⁸ आज पूँजीवाद ने भारतीय कृषि के सखना को बदल दिया है। आज कृषि प्रधान और कृषि मूल्य आधारित मुद्दा बनकर उभरा है।¹⁹ गरीब किसानो का जमीन राष्ट्रहित में छिन लिया जा रहा है। पिछले दो दशको में शहरीकरण और औधोगीकरण के कारण देश में बहुत सारे सामजिक प्रतिरोध हुए है। भारत के राज्योंमें SEZ को लेकर प्रतिरोध हुआ है। क्योकि भारत एक कृषि प्रधान देश होने कारण यहाँ पर जमीन लेना बहुत बड़े प्रतिरोध को जन्म देना है। नक्सलवाद भी एक प्रतिरोध के रूप में सरकार के सामने बहुत बड़ी चुनौती बनकर उभरा है। जो ंपना राजनीतिक प्रतिनिधित्व का माँग कर रहे है।

परन्तु ंिकास किसी भी कीमत पर करना भारत सरकार का प्राथमिकता बन गया है। जिसके कारण बहुत सारे किसानो ने जमीन खो दिया है। कर्ज के बोझ में दबकर बहुत सारे किसानो ने आत्म हत्या कर लिया है।²⁰ जिसको स्वयंप्रतिरोध माना जा सकता है। 1997-2008 तक 2 लाख किसानो ने आत्म हत्या किया है। भारत में कई राज्योंमें भूमि-ंधिग्रहण के खिलाफ प्रतिरोध चल रहा है। जिसमे NGO की भूमिका महत्वपूर्ण है। आदिंसी आन्दोलन कलिंग नगर में टाटा स्टील के खिलाफ हुआ है। नियमगिरि का मुद्दा पर किसानो ने एकजुटता कायम करके इसका ंरोध किया। गुजरात में जमीन ंधिकार आन्दोलन, केरला में कोकाकोला के खिलाफ आदिंसी और किसानो ने प्रतिरोध किया है। Dec 2009 में SEZ के खिलाफ ंखिल भारतीय सहभागी आन्दोलन हुआ है। भू-सुधार को पुनः से लागु करने की माँग हो रही है। आष्यप्रदेश में दलित महिलायोंको जमीन देना, केरला में शिक्षा के ंधिकार के समान जमीन का भी ंधिकार को लागु करने की माँग किया गया है।²¹ 2012 में 45000 हजार भूमिहीन आदिंसी दिल्ली पहुच कर भू-सुधार को सही से लागु करने की माँग कियो। पञ्जाब सरकार के ठेके आधारित कृषि के खिलाफ किसानो का प्रतिरोध हुआ है।²²

¹⁸ ibid

¹⁹ Shah, Ghanshyam . Social Movement In India: A Review Literature, First Edition.

²⁰ Jha, Praveen. Social resistance and land question in contemporary India.

²¹ ibid

²² ibid

इस प्रकार से समकालीन भारत में किसानों का प्रतिरोध सरकार के खिलाफ हो गया सरकार कृषि के क्षेत्र में कम निवेश कर रही है। किसान कृषि और जमीन को बचने के लिए सरकार से प्रतिरोध कर रहे हैं। परन्तु आज के समय में किसानों के प्रतिरोध का राजनीतिक प्रतिनिधित्व नहीं हो पा रहा है। भू-सूधार का महत्व बढ़ता जा रहा है क्योंकि इससे राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा के साथ-साथ किसानों के आर्थिक और सामाजिक स्तर में भी बदलाव किया जा सकता है। परन्तु इस नीति का क्रियान्वयन सही तरीके से नहीं हो पा रहा है। गरीब किसानों के प्रतिरोध को कम करने के लिए सरकार ने एक अलग नीति के तहत बाट दिया है। जिसमें BPL यानि छोटे किसान, सीमांत किसानों को आनाज देकर कुछ आर्थिक सहायता देकर प्रतिरोध कम कर दिया है। ये किसान जाति आधारित राजनीतिक प्रतिनिधित्व का समर्थन करते हैं। इसके कारण किसानों में एकजुटता नहीं हो पा रहा है। जब तक एकजुटता नहीं होगा तब तक प्रतिरोध और राजनीतिक प्रतिनिधित्व संभव नहीं है। भारत में अलग अलग जाति के किसान सरकार के विरोध में रेल रोकें, सङ्गठन और पार्टी आधारित किसान रैली कर रहे हैं जो बहुत हद तक सफल नहीं हो पा रहा है।

9. निष्कर्ष:

भारत कृषि प्रधान देश होने के कारण यहाँ जमीन का महत्व है इस जमीन से अर्थव्यवस्था को मजबूत किया जाता है। औपनिवेशिक काल में जिस तरीके से किसानों पर कर लगाया गया और उनके जमीन जमीनदारों और साहूकारों के द्वारा गलत तरीके से हड़प लिया गया। इससे किसानों की आजीविका खत्म हो गया। जिसके कारण किसानों ने प्रतिरोध करना शुरू कर दिया। औपनिवेशिक काल में कुछ किसान विद्रोह सफल रहे और कुछ असफल भी हुआ। जब किसान विद्रोह को राजनीतिक प्रतिनिधित्व मिला तो यह मजबूत हुआ और औपनिवेशिक शासन का खिलाफ किया।

परन्तु आजादी के बाद किसानों का प्रतिरोध सरकार के खिलाफ अन्य मुद्दों पर होने लगा। किसानों को एकजुट करने में राजनीतिक पार्टियों और संगठनों ने अहम भूमिका निभाया। भारत में लोकतंत्र होने के कारण किसानों को आजादी के बाद एक वर्ग के रूप में महत्व दिया गया। इनके हित में नीतियों का निर्माण किया गया। किसान आन्दोलन को अभिजातों ने नेतृत्व प्रदान किया। 20 वीं सदी में सामाजिक संरचना बदलने के कारण किसान आन्दोलन में भी बदलाव आता है। आरक्षण और बाजार ने किसानों के पहचान को बदल दिया है। आज के समाज में किसानों का पहचान पहले जाति से जुड़ गया है फिर वे किसान हैं। **दीपांकर गुप्ता** के अनुसार “किसान” किसान नहीं बनना चाहता है जिससे किसानों का प्रतिरोध और प्रतिनिधित्व कम हो रहा है। अगर पहले अकाल पड़ता था तो किसान साहूकार और जमीनदारों के खिलाफ आन्दोलन करते थे परन्तु सूखा के कारण हो रहे भूखमरी और गरीबी का प्रतिरोध नहीं किया जाता है। क्योंकि बाजार और सरकार ने किसानों को अलग अलग हितों में विभाजित कर दिया है। जिससे किसान एकजुट नहीं हो पा रहा है। परन्तु फिर से राजनीतिक पार्टियाँ और सामाजिक संगठन किसानों से जुड़ने का प्रयास कर रही हैं। जिसके कारण किसानों का पहचान आज के समाज में विधमान है।

10. संदर्भ सूचि:

- Nilsen, Alf Gunvald. For A Historical Sociology Of State Society Relations In The Study Of Subaltern Politics. In Alf Gunvald Nilsen, & Srila Roy, *New Subaltern Politics Reconceptualizing Hegemony And Resistance In Contemporary India*.
- Pandey, Gyanendra. (2013). A History Of Prejudice: Race, Caste And Difference In India And The United States, Cambridge University Press, New Delhi.
- Loaui, El Habib. (2011). Retracing The Concept Of The Subaltern From Gramsci To Spivak: Historical Development And New Application.
- Kaviraj, Sudipta. (2009). Modernity And Politics In India. *Daedalus*, Vol. 129, No. 1, Multiple Modernities (Winter, 2000), pp. 137-162.
- Guha, Ranjit. (1988) On Some Aspects Of The Historiography Of Colonial India. Oxford University Press, Pp.35-44.
- Ludden, David. A Brief History Of Subalternity.
- Kisan Struggles In India, Retrieved From
[Http://Shodhganga.Inflibnet.Ac.In/Bitstream/10603/8104/9/09_Chapter%202.Pdf](http://Shodhganga.Inflibnet.Ac.In/Bitstream/10603/8104/9/09_Chapter%202.Pdf).
- Singharoy, K Debal. (2005). Peasant Movements In Contemporary India: Emerging Forms Of Domination And Resistance. *Economic And Political Weekly*, Vol. 40, No. 52 (Dec. 24-30, 2005), Pp. 5505-5513.
- Pandey, Abha. (1978). Gandhi And Agrarian Class. *Economic And Political Weekly*, Vol. 13, No. 26, Pp. 1077-1079.
- Resistance In Social Science, (2015). Retrieved From [Http://What-When-How.Com/Social-Sciences/Resistance-Social-Science/](http://What-When-How.Com/Social-Sciences/Resistance-Social-Science/).
- Political Representation (2011). First Published Mon Jan 2, 2006; Substantive Revision Mon Oct 17, 2011.
- Guha, Ranjit. (1999). Elementary Aspects Of Peasant Insurgency In Colonial India. Oxford University Press.
- Subaltern Postcolonial India (2015).The Free Encyclopedia, 11/29/2015.
- Posani, Balamuralidhar. (2009). Farmer Suicides And The Political Economy Of Agrarian Distress In India.
- Shah, Ghanshyam. Social Movement In India: A Review Literature, First Edition.
- spivak, gayatri chakravorty, can the subaltern speak?
- Jha, Praveen. (2014). Social Resistance And Land Question In Contemporary India.